ISSN 2321 –0567
Vol. IV Issue I (Jan- 2016)

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी

बलजीत कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर
गुरू नानक खालसा कॉलेज, करनाल

Paper Submission Date: 09th Jan. 2016
Paper Acceptance Date: 15th Jan. 2016

विश्व गुरू भारत की भारतीय श्रेष्ठ भाषा के अपनेपन ने आज विश्व को प्रभावित किया है। इसके अनेक समर्पित आधार हैं। यथा हिन्दी की वैज्ञानिक वर्णावली, स्वर व्यंजनों का अपना सार्थक सटीक है। अर्थाथ बोल अथवा लेखन प्रद्वति, ज्ञान और विज्ञान संबंधी अतुल सामग्री, मानवता का पोषक साहित्य, एकात्मकता के मूल एवं सुभाषित, उन्नति के प्रशस्त पंच प्राकृति के सामजस्य का चिन्तन, सबसे मेलजोल का व्यवहारिक ज्ञान एवं भौतिक प्रोद्यौगिकी आदि आधुनिक विषयों की विवेचना की सामर्थ्य यहां स्पष्ट प्रत्यक्ष प्रदर्शित है। हिंदी हमारी राष्ट्र चेतना के साथ साथ वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को परिपुष्ट करने में संलग्न है और समर्पित भी। इसलिए हिन्दी भाषा न केवल हमारे भारतीय की प्रिय है अपितु आज यह अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर उन्मेशित है।

हिन्दी जगत् के महान साहित्यकारों ने हिन्दी को भारत उन्नति का मूल आधार निर्देशित करते हुए लिखा है–

'निजभाषा उन्नति अहै सब उन्नति का मूल
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय का शूल'

भारतेन्दु हरिशचन्द्र

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण ने भी उल्लेख किया है कि–

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारे आरती
भगवान भारत वर्ष में गुंजे हमारी भारती।

भारत भारती

विश्व के विभिन्न देशों के महा मनीषी हिन्दी के महान प्रेमी एवं समर्पित साहित्यकार सेवाभावी रहे हैं। यथा ब्रिटिन के जार्ज अब्राहम, ग्रियर्सन, इटली के तेरूसीतोरी, फ्रांस के गर्सा दा तासी, बल्जियम के डा0 मुनीश्वर लाल चिंतामणी आदि अनेक विदेशी विद्वानों ने हिंदी पर अतुल शोध किया एवं उपयोगी साहित्य दिए और हिंदी की प्रभूत सर्जना की हिंदी के प्रति अपना आत्मीय प्रेम प्रकट किया है। आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण इस का प्रमाण है कि विश्वभर में विद्वान मनीषी हिंदी प्रखरता एवं उपादेयता को महत्वपूर्ण मानते हैं। हिंदी भाषा का अपना एक अविरल प्रवाह है। हिंदी का विस्तृत समाज भी है। भारतीय समस्त बोलियों से एवं अंग्रेजी भाषा से भी व सोहर्दयपूर्ण संबध हैं। सबसे सौहदर्य रखना हिंदी की अपनी विशेषता है।

इसलिए यह भारतीय धरातल के साथ–2 विश्व क्षितिज पर अपना वर्चस्व बनाने में सहज ही उद्यत है।

भारतीय संस्कृति से संबध सभी कलाओं–प्रिय कलाओं, मूर्तिकला, वाद्य तथा संगीत कला सथापत्य एवं वास्तु कला आदि सभी में हिंदी का स्वरूप देखा जा सकता है। अजन्ता–ऐलोरा से लेकर खुजराहो तक के सुकिति मूर्ति चित्रकला के दृश्य हिन्दी भाषों से उत्प्रेरित हैं। इसी प्रकार उत्तर और दक्षिण और पूर्व–पश्चिम के मंदिर निर्मित संस्कृति हिन्दीमय हैं। विदेशों में भी भारतीय संस्कृति के प्रतीक हिन्दी के नामित देवी देवताओं को प्रत्यक्ष करते हैं। दुर्गा, शिव, गौतम बुद्व आदि से संबंध मूर्तियां एवं पर्वत–हिमालय कैलाशनाथ, विन्ध्य अरावली आदि पर्वत भी हिन्दी शब्दावली का प्राप्य लिए हुए हैं। भारतीय नदियां अन्त काल से बह रही हैं। गंगा यमुना, सरस्वती, सिंध, ब्रहापुत्र, नर्मदा आदि हिन्दी से नमित हैं और इसी क्रम में विश्व की नदियां नील, दजला (संजला) टेम्स (तमस या तमसा) आदि भी हिन्दी नामांकित हैं।

भाषा विज्ञान की दृष्टि से जब विचार किया जाता है तो अनेक देशों के नाम संस्कृतमय हैं। जो बाद में हिन्दी का रूपांतर बने यथा अमेरिका (अमा–स्थान), सीरिया (सुरालय), चीन (चिन्ह), जापान (जप स्थान), अफ्रीका (अपर स्थान), सिंगापुर (श्रृंगारपुर) आदि संस्कृत की पौत्री होने के साथ साथ संस्कृत ने तत्सम् एवं तत्भव शब्द अपनी विशाल हृदयता हिन्दी ने अपनाए और विश्व को अपने मौलिक रूप से परिचित कराने की सार्थक उपक्रम का विश्व की सभी भाषाओं से सर्वाधिक वालों की भाषा के रूप में प्रतिशत हुई।

भाषा	**बोलने वाले**	**प्रतिशत**
फ्रेंच	70 मिलियन	1.000
अरबी	100 मिलियन	1.42
रूसी	160 मिलियन	2.28
अंग्रेजी	340 मिलियन	4.85
स्पेनी	360 मिलियन	5.14
चीनी	900 मिलियन	12.85
हिन्दी	1270 मिलियन	15.14

(उद्घृत– हिन्दी विश्व काव्यांजलि (द्वितिय खंड) पृष्ठ 8)

आज हिन्दी का वर्चस्व केवल बोलचाल के रूप में ही प्रभावी नही है। अपितु कम्प्यूटरी और इंटरनेट की दुनिया में भी उपमित गति बनाए हुए हैं।

संचार क्रांति की संपादिका के रूप में हिन्दी आज अपना योगदान बनाने में पूर्व सक्षम प्रदृष्ट हैं। कम्प्यूटर की भाषा अंकों की भाषा जिसकी उपलब्धता समग्र रूप से हिन्दी में विद्यमान है। आज कम्प्यूटर पर हिन्दी लिपि (देवनगरी) में कार्य करने के लिए विविध प्रकार के सॉफटवेयर प्रयोग किए जाने लगे हैं। आज हिन्दी में वैबसाईट, ई–मेल, चैट , वैब सर्च, एम. एम. एस. तथा अन्यान्य हिन्दी सामग्री उपलब्ध है। इंटरनेट पर भी हिन्दी में संसाधनों के भरपूर आयाम विद्यमान हैं। वर्तमान में नवीनतम हिन्दी भाषाई कम्प्यूटर सॉफटवेयर निर्मित हो रहे हैं। आज न केवल भारत में इसकी पहल है अपितू विश्व में लोगों का रूझान हिन्दी कम्प्यूटर के प्रयोग पर बहुतायत से हो रहा है। कम्प्यूटर पर हिन्दी में टाईप करना भी सरलतम है।

आज माईक्रोसाफट की वेबसाईट से इंडिक आई. एम. ई. सॉफटवेयर करना एक सरल एवं सहिज विकल्प है। इसके माध्यम से आउटलुक, जीमेल, याहू व रैडिफमेल प्रशित कर सकना सहज है। यूनिकोड कान्सोर्टियम द्वारा सूचना विनिमय के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानक कूट निधारनोपरांत विश्व की लगभग सभी लिखित लिपियों के अक्षर चिन्हों की पहचान सरल हो गई है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी यूनिकोड मानक कूट निर्धारित हो चुके हैं। इससे हिन्दी टाईपिंग सरल हो गई है।

आज विश्व में इंटरनेट का प्रयोग बहुलता से है। संख्या के आधार पर स्पष्ट है कि भारत के लगभग दस करोड लोग इंटरनेट का उपयोग करते हैं। यद्यपि भारत इस प्रयोग में अमेरिका, चीन व जापान के बाद आता है। लेकिन जिस गति से भारत में इसका उपयोग बढ रहा है उससे स्पष्ट होता है कि एक दिन इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में भारत अग्रण्य बनेगा।

विश्व में आज मोबाईल का प्रचलन बहुतायत से हैं। विश्वभर में हिन्दी में मोबाईल पर वार्ता सहज सुलभ है। यह हिन्दी की उपादेयता को ही घोषित करता है। वर्तताान में कम्प्यूटर उपभोक्ताओं के लिए कामकाज से लेकर डाटाबेस तक हिन्दी में प्राप्त है। भारत में 80 प्रतिशत अधिकाधिक लोग हिन्दी जानते हैं।

आज हिन्दी भाषा विश्व ज्ञानोपलब्धि की माध्यम हिन्दी वेबसाईट के मायम से बन चुकी है। टेक्नालीजी के इस युग में हिन्दी ने अपने वैज्ञानिक स्परूप से विश्व में उपयोगी स्थान बनाकर अपना उज्ज्वल भविष्य भी प्रदर्शित करने का योग बनाया हुआ है।

विश्वपटल पर आज भी अंग्रेजी भाषा अंतर्राष्ट्रीय के रूप में शामिल है। लेकिन अब उसकी उपादेयता अधिक महत्वपूर्ण नही है। भारत की भाषा हिन्दी है। भारत में अंग्रेजी का वर्चस्व उतना कारगर नही है जितना हिन्दी का है। हिन्दी के बिना अंग्रेजी का अध्यापन भी सफलता ग्रहण नही करता। भारत और उत्तर देशों में हिन्दी की पकड अन्य विदेशी भाषाओं से अधिक है। आज विश्व के जनजन हिन्दी सीखने के लिए आतुर दृष्टि गोचर हो रहे हैं।

हिन्दी भाषा और साहित्य में शुभ संस्कारों का समुच्चय हिन्दी को विश्वस्तर पर सम्मान दे रहा है। हिन्दी की मूल्यांकन संवेदनशीलता उसके प्रति विश्व आकर्षण उत्पन्न करता है। हिन्दी अपने अंतर में अपने सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, इतिहास, विज्ञान एवं साहित्य संबंधी सुविचार सत्य के साथ संजोए हुए हैं। अतः हिन्दी का प्रभाव एवं प्रवाह विश्व पर प्रभावी बनता जा रहा है। आज विश्व में लोगों की, वैज्ञानिकों की, तकनीकी विशेषज्ञों की और प्रौद्योगिक क्षेत्र के प्रवीणजनों की दृष्टियां हिन्दी की और सदाक्षमता से संयुक्त है। आज विश्व हिन्दी के बढते कदमों से आनंदित है।

हिन्दी भाषा विश्व की ऐसी अद्वितीय एवं आदृत व्यवहारावली है जो अपने में विश्व कल्याण के भाव को संजोए है। इसलिए हिन्दी की उर्जा असीमित है तथा विश्वभर को प्रभावित करती है। लोक कल्याण की यह भाषा सभी को प्रभावित कर अपनी और आकर्षित कर सबके संयोजना का केन्द्र बन चुकी है। यह विश्व बंधुत्व का भी माध्यम बनने में अग्रणी है। इसके साहित्यकारों ने जो अपना साहित्य विश्व को दिया है वह मानवतावादी को पावन करने

की उर्जा वाला विश्वमानव समाज को समानता और एकता के सूत्र में पिरोने वाला तथा संस्कार पूर्व शिक्षा में पारंभित बनाने की क्षमता को प्रदान करता है। इसके यही सदगुण विश्व आकर्षण का केन्द्र बनकर हिन्दी को आत्मीय बनाने को उत्प्रेरित करते हैं। सच तो यह है कि हिन्दी जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय, ऊँच–नीच आदि की सीमाओं से परे तथा देश विदेश की परिसीमाओं से पृथक विश्व एकत्व की भाषा है। इसलिए हिन्दी भाषा विश्वभर में आदर प्राप्त कर रही है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी विश्व गौरव ग्रन्थ (प्रथम खंड) संपादन डा. राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा कर्मण्य तपोभूमि सेवा ब्यास प्रकाशन, ग्वालियर।
2. हिन्दी विश्व काव्याण्जली (प्रथम खंड) संपादन डा. राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा।
3. हिन्दी विश्व काव्यान्जली (द्वितिय खंड) संपादन डा. राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा।
4. हिन्दी दश और दिशा संपादक डा. महेश दिवाकर विश्व पुस्तक प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. विश्वपटल पर हिन्दी संपादक डा. महेश दिवाकर विश्व पुस्तक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी राष्ट्री एवं अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ संपादक डा. महेश दिवाकर विश्व पुस्तक प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. विश्व में हिन्दी के अनुधेय संदर्भ संपादक गुजरा प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति राष्ट्रभाषा हिन्दी भवन, एलिसब्रिज, अहमदाबाद–38006 ।
8. विश्व स्तर पर हिन्दी संपादक– डा. मधत लाल पटेल प्रकाशन शांति प्रकाशन, रोहतक 124001 हरियाणा।